वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 298

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ पूजा

–रचयित्री–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

– प्रकाशक –
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	आश्विन शुक्ला पूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रतियाँ	14 अक्टूबर 2008	10/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
-: मार्गदर्शन :-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
-: निर्देशन :-
पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज
-: सम्पादक :-
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

आचार्य श्री कुंदकुंददेव ने प्रवचनसार में कहा है–

अशुभ उपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ इस संसार में परिभ्रमण किया करता है तथा धर्म से परिणत हुआ जीव शुद्धोपयोग से तो निर्वाण की प्राप्ति कर लेता है और शुभोपयोग से स्वर्ग के सुखों की प्राप्ति करता है।

उस शुभोपयोग को बनाए रखने के लिए दान और पूजा ये दो प्रमुख कर्तव्य बताए गये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में चौबीस तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों का दिग्दर्शन कराने वाली ''तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ पूजा'' है जिसकी रचना पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने की है।

24 तीर्थंकरों की कितनी जन्मभूमियाँ हैं, कहाँ हैं आदि को ठीक प्रकार से समझाने के उद्देश्य से इस पूजा की रचना की गई है क्योंकि वर्तमान में प्रायः समाज में यह स्थिति है कि लोग यह तो जानते हैं कि 24 तीर्थंकर

भगवन्तों की 5 निर्वाणभूमियाँ हैं परन्तु जन्मभूमियों के बारे में पूछने पर वे समुचित उत्तर नहीं दे पाते हैं अतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमती माताजी ने तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास का बीड़ा उठाया।

प्रसन्नता का विषय है कि पूज्य माताजी की आज्ञा/प्रेरणा को शिरोधार्य करते हुए अब कई जन्मभूमियाँ– अयोध्या, कुण्डलपुर, हस्तिनापुर, काकन्दी आदि विकास की चरम सीमा पर हैं तथा अन्य जन्मभूमियाँ भी हम सभी को पवित्रता, पावनता का संदेश प्रदान कर रही हैं।

इन सभी जन्मभूमियों का दर्शन-वंदन-पूजन सभी के लिए परमकल्याणकारी है।

इस पुस्तक के माध्यम से आप लोग तीर्थंकर जन्मभूमि की पूजा करके कर्म निर्जरा करते हुए अपने शुभोपयोग को स्थिर बनाए रखें, यही इसकी सार्थकता है।

दो शब्द

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

कहा जाता है कि प्रत्येक प्राणी को जननी और जन्मभूमि सबसे ज्यादा प्यारी होती है तथा उसकी प्राप्ति का सुख स्वर्ग के सुख से भी अधिक होता है। विचार करके देखा जाये तो जब हम और आप जैसे साधारण संसारी प्राणियों के लिए ये इतनी महत्त्वशाली हैं तो तीर्थंकर जैसे महापुरुष की जननी और जन्मभूमि कितनी गरिमाशाली होती होंगी, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि तीर्थंकर की माता और मातृभूमि की स्वर्ग से देवगण आकर पूजा-वंदना करते हैं तथा उनकी (तीर्थंकर की) जन्मभूमि में, उनकी जननी के आँगन में 15 महीने तक धनकुबेर असंख्य रत्नों की वर्षा करते हैं।

वर्तमान में इसे हुण्डावसर्पिणी काल का दोष ही कहा जायेगा कि हमारे वंदनीय-पूज्यनीय 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ उपेक्षा की शिकार हो गईं। जब से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की दृष्टि इन जन्मभूमि तीर्थों की ओर गई, तब से कई जन्मभूमियाँ विकास की

चरम सीमा पर पहुँच चुकी हैं, संभव है कि आने वाले कुछेक वर्षों में सभी 16 जन्मभूमियाँ विकसित होकर अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर लेंगी।

पूज्य माताजी की जन्मभूमियों के प्रति विशेष भक्ति को देखकर उनकी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ पूजा रची है तथा एक ''तीर्थंकर जन्मभूमि विधान'' नाम से बहुत ही सुन्दर विधान की भी रचना की है।

प्रस्तुत पुस्तक में जन्मभूमि तीर्थ की पूजा, भजन, आरती के साथ ही जन्मभूमि की वंदना संस्कृत-हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित है, इसमें से संस्कृत वंदना पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा विरचित है तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी की रचनाएँ पूज्य चंदनामती माताजी की हैं।

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाओं को पढ़कर तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थों का महत्व समझकर उनके प्रति सभी की भक्तिभावना जागृत हो, यही पुस्तक को प्रकाशित करने का प्रमुख उद्देश्य है।

तीर्थ विकास की प्रेरणास्रोत

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा)
वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण,

शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) विकास की प्रेरणा, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी।

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री।

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)।

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन।

भाई – चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)।

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)।

लौकिक शिक्षा – हाईस्कूल।

संघ में ज्ञानार्जन हेतु प्रवेश – सन् 1969 जयपुर (राज.) में।

आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत – सन् 1971, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से "शास्त्री" की उपाधि, 1973 में "विद्यावाचस्पति" की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान आदि लगभग 25 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा "षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं "भगवान ऋषभदेव चरितम्" की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.) – श्री ऋषभदेव भगवान
– श्री अजितनाथ भगवान
– श्री अभिनंदननाथ भगवान
– श्री सुमतिनाथ भगवान
– श्री अनंतनाथ भगवान

2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.) – श्री संभवनाथ भगवान

3. कौशाम्बी (उ.प्र.) – श्री पद्मप्रभु भगवान

4. वाराणसी (उ.प्र.) – श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
– श्री पार्श्वनाथ भगवान

5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र. – श्री चन्द्रप्रभु भगवान

6. काकन्दी (देवरिया जि.-गोरखपुर) उ.प्र. – श्री पुष्पदंतनाथ भगवान

7. भद्दिलपुर[1] – श्री शीतलनाथ भगवान

8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र. – श्री श्रेयांसनाथ भगवान

9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार) – श्री वासुपूज्यनाथ भगवान

10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.) – श्री विमलनाथ भगवान

11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.) – श्री धर्मनाथ भगवान

12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) – श्री शांतिनाथ भगवान
– श्री कुन्थुनाथ भगवान
– श्री अरनाथ भगवान

13. मिथिलापुरी – श्री मल्लिनाथ भगवान
– श्री नमिनाथ भगवान

14. राजगृही (नालंदा-बिहार) – श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.) – श्री नेमिनाथ भगवान

16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) – श्री महावीर भगवान

–निवेदक –

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

प्रधान कार्यालय –**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

फोन नं.-01233-280184, 280236

1. कुछ लोग इसे बिहार में मानते हैं, कुछ लोग विदिशा में मानते हैं।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ पूजा

स्थापना (चौबोल छन्द)

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव से, महावीर तक करूँ नमन।
चौबीसों जिनवर की पावन, जन्मभूमियों को वन्दन।।
जैनी संस्कृति के दिग्दर्शक, इन तीर्थों का करूँ यजन।
मेरी आत्मा बने अजन्मा, जन्मभूमि का कर पूजन।।1।।

– दोहा–

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पूजन के प्रारंभ में, है यह विधि महान।।2।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अष्टक (शंभु छन्द)–

गंगा में डुबकी लगा-लगा, मैंने निज को पावन माना।
अब भावकर्ममल धोने को, पूजन में जलधारा डाला।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।1।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

निज आत्मशांति पाने हेतू, तीरथ वंदन अवलंबन है।
उनके अर्चन के लिए घिसा, मैंने मलयागिरि चंदन है।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।2।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

अक्षयपद की प्राप्ती हेतू, जहाँ से जिनवर के कदम बढ़े।
उन जन्मक्षेत्र के परमाणू को, मेरे अक्षतपुंज चढ़े।।

तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।3।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

जहाँ विषयभोग का सारा सुख, क्षणभर में प्रभु ने त्याग दिया।
उन पावन पूज्य नगरियों को, मैंने पुष्पांजलि चढ़ा दिया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।4।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

जहाँ स्वर्ग का भोजन आता था, फिर भी प्रभु उसको छोड़ चले।
अब मेरा यह नैवेद्य थाल, अर्पित है उन तीर्थों के लिए।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।5।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

जहाँ मोह राग का बंधन भी, जिनवर को नहीं लुभा पाया।
उन जन्मभूमियों की आरति, करने को दीप जला लाया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।6।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

कर्मों को शीघ्र जलाने का, जिनवर ने जहाँ पुरुषार्थ किया।
मैंने भी धूप जला तीरथ की, पूजन का पुरुषार्थ किया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।7।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

संसार सुखों को भोग जहाँ, मुक्तीफल की अभिलाषा थी।
फल से पूजा करते-करते, मैंने भी यह अभिलाषा की।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।8।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल गंध व अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल आदि सहित।
''चन्दनामती'' ये अष्ट द्रव्य, प्रभु जन्मभूमियों को अर्पित।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।9।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

– दोहा–

कंचन झारी में भरा, प्रासुक निर्मल नीर।
शांतीधारा कर प्रभो, पाऊँ भवदधि तीर।।

शांतये शांतिधारा

भाँति-भाँति के पुष्प को, अंजलि में भर लाय।
पुष्पांजलि करते हृदय, की कलिका खिल जाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– शंभु छन्द–

इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में, शाश्वत तीर्थ अयोध्या है।
जहाँ सदा जन्मते तीर्थंकर, इन्द्रों से पूज्य सर्वदा है।।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में, कुछ कालदोष का कारण है।
उन्नीस प्रभू के जन्म हुए, अन्यत्र तभी वे पावन हैं।।

– दोहा–

तीर्थंकर अरु तीर्थ को, नमन करूँ शत बार।
जन्मभूमियों को सभी, प्रणमूँ बारम्बार।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, फिर हुए अजित अभिनन्दन हैं।
फिर सुमतिनाथ एवं अनन्त, इन पाँच प्रभू को वन्दन है।।
इस युग में तीर्थ अयोध्या में, जन्मे ये पाँच जिनेश्वर हैं।
अतएव अयोध्या नगरी के प्रति, मेरा अर्घ्य समर्पित है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर ऋषभदेव-अजितनाथ-अभिनन्दननाथ-सुमतिनाथ-अनंतनाथ पंचतीर्थंकराणां जन्मभूमि अयोध्या तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर संभवनाथ तृतिय, श्रावस्ती नगरी में जन्में।
कार्तिक सुदि पूनो तिथि के दिन, मेला लगता प्रति वर्षों में।
उत्तुंग जिनालय जहाँ तीर्थ की, महिमा को बतलाता है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ नित, प्रभु दर्शन की अभिलाषा है।।2।।

ॐ ह्रीं तृतीय तीर्थंकर श्री संभवनाथ जिनेन्द्रस्य जन्मभूमि श्रावस्ती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छट्ठे तीर्थंकर पद्मप्रभु से, कौशाम्बी नगरी पावन।
जिन जन्म समय में इन्द्रों ने भी, आकर उसको किया नमन।
प्राचीन जिनालय उस भूमी की, गौरव गाथा कहता है।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु, आतमसुख की बस इच्छा है।।3।।

ॐ ह्रीं षष्ठतीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि नगरी में सुपार्श्व, अरु पारस तीर्थंकर जन्मे।
पन्द्रह-पन्द्रह महिने जहाँ बरसे, रत्न मात के आँगन में।।
वाराणसि का वह क्षेत्र आज भी, पावन माना जाता है।
उस तीरथ का कण-कण पूजूँ वहाँ जिनमंदिर सुखदाता है।।4।।

ॐ ह्रीं सप्तमतीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ त्रयोविंशतितम तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की, जन्मभूमि है चन्द्रपुरी।
जहाँ जिनवर के जन्मोत्सव में, आई थी पूरी स्वर्गपुरी।।
वाराणसि नगरी के समीप, निर्मित प्राचीन जिनालय है।
उस चन्द्रपुरी को अर्घ्य चढ़ा, मैं चाहूँ निज सुख आलय है।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टमतीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि चन्द्रपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

काकन्दी में प्रभु पुष्पदन्त, नवमें तीर्थंकर जन्मे थे।
वहाँ पन्द्रह महिने तक कुबेर के, द्वारा रत्न बरसते थे।।
सौधर्म इन्द्र शचि इन्द्राणी के, साथ जहाँ पर था आया।
उस पुण्य तीर्थ काकन्दी की, पूजन करने मैं भी आया।।6।।

ॐ ह्रीं नवमतीर्थंकर श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि-काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवें तीर्थंकर शीतलप्रभु, भद्रिकापुरी जन्मस्थल है।
जहाँ खेले वे जिनराज, देवताओं के संग बालकपन में।।
जिनवर के पुण्य प्रभावों से, वह नगरी अब भी वंद्य कही।
उस भद्दिलपुर को अर्घ्य चढ़ा, मैं पाना चाहूँ पुण्यमही।।7।।

ॐ ह्रीं दशमतीर्थंकर श्रीशीतलजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि भद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांस-नाथ जन्मे थे सिंहपुरी।
जो सारनाथ से है प्रसिद्ध, निकटस्थ है वाराणसि नगरी।।
प्रभु की अतिशयकारी विशाल, प्रतिमा वहाँ सुखद विराज रहीं
उस तीरथ सिंहपुरी की रज को, वंदूँ पाऊँ जन्म वहीं।।8।।

ॐ ह्रीं एकादशमतीर्थंकर श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि सिंहपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर में प्रभु वासुपूज्य, तीर्थंकर जन्मे सुखदाता।
उनके पाँचों कल्याणक से, वह सिद्धक्षेत्र भी कहलाता।।
उस चम्पापुर की अष्टद्रव्य ले, पूजन करने को आया।
तीरथ वन्दन का पुण्य मिले, बस यही आश मन में लाया।।9।।

ॐ ह्रीं द्वादशमतीर्थंकर श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि चम्पापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कम्पिलापुरी में तेरहवें, तीर्थंकर विमलनाथ जन्मे।
इक भव्य जिनालय बना हुआ, है कम्पिल जी के परिसर में।।
भगवान विमल प्रभु तीर्थंकर की, प्रतिमा भी मनहारी है।
आत्मा को तीर्थ बनाने हेतू, पूजन यह सुखकारी है।।10।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशम तीर्थंकर श्री विमलनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कम्पिलतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जन्मस्थल रत्नपुरी।
इस नगरी से अतिशयकारी, गजमोती की इक कथा जुड़ी।।
दो सत्य कथानक कहने वाली, रत्नपुरी को वंदन है।
श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के, चरणों में अर्घ्य समर्पण है।।11।।

ॐ ह्रीं पञ्चदशम तीर्थंकर श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमिरत्नपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिकुंथु अरनाथ प्रभू की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।
सोलहवें सत्रहवें अट्ठारहवें, तीर्थंकर त्रय की।।

तीरथ प्राचीन कहा ही है, वहाँ जम्बूद्वीप बना प्यारा।
उस जन्मभूमि का अर्चन कर, मैं सफल करूँ जीवन सारा।।12।।

ॐ ह्रीं षोडशम सप्तदशम अष्टादशम तीर्थंकरत्रय-श्रीशांतिकुंथ्वरजिनेन्द्राणां जन्मभूमि हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलानगरी श्री मल्लिनाथ, नमिनाथ की जन्मस्थली कही।
दोनों तीर्थंकर के युग में, वहाँ रत्नवृष्टि भी खूब हुई।।
इन्द्रों द्वारा यह वंदित है, इस नगरी का वन्दन कर लो।
ले अष्टद्रव्य का थाल प्रभू की, जन्मभूमि अर्चन कर लो।।13।।

ॐ ह्रीं एकोनविंशतितम एकविंशतितमद्वयतीर्थंकर श्री मल्लिनाथनमिनाथ जिनेन्द्रयोः जन्मभूमि मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु जी, जन्मे राजगृह नगरी में।
वहाँ खड्गासन मुनिसुव्रत प्रभु की, प्रतिमा अतिशय सुन्दर है।।
महावीर प्रभू की प्रथम दिव्यध्वनि, वहीं खिरी विपुलाचल पर।
उस पंचपहाड़ी से शोभित, राजगृहि को पूजूँ रुचिधर।।14।।

ॐ ह्रीं विंशतितम तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि राजगृही तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौरीपुर नगरी है प्रसिद्ध, नेमिप्रभु के जन्मस्थल से।
राजुल को ब्याहन चले जहाँ से, नेमिनाथ जूनागढ़ में।।

नहिं ब्याह किया लेकिन वे तो, चल दिये मुक्तिकन्या वरने।
उस शौरीपुर को नमन करूँ, औ अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ती से।।15।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशतितम तीर्थंकर श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि शौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिसवें अंतिम तीर्थंकर का, जन्म हुआ कुण्डलपुर में।
जो नालंदा औ राजगृही के, निकट बसा अद्यावधि है।।
वहाँ नंद्यावर्त महल परिसर में, महावीर प्रभु मंदिर है।
उस प्रान्त बिहार का कुण्डलपुर, सचमुच जिनशासन का दिल है।।16।।

ॐ ह्रीं अंतिम तीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य–

चौबिस तीर्थंकर भगवन्तों की, सोलह जन्मभूमियाँ हैं।
है प्रथम अयोध्या एवं अंतिम, कुण्डलपुर की महिमा है।।
जिनवर के जन्मों से पावन, भारतभूमी का कण-कण है।
इस भरतक्षेत्र के भारत को, इसलिए मेरा शत वंदन है।।17।।

ॐ ह्रीं अयोध्याप्रभृति कुण्डलपुरपर्यन्त वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकराणां षोडश जन्मभूमितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र - **ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां षोडशजन्मभूमि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

– शंभु छन्द–

जय जय तीर्थंकर तीर्थनाथ, तुम धर्मतीर्थ के कर्ता हो।
जय जय चौबीस जिनेश्वर तुम, त्रिभुवन गुणमणि के भर्ता हो।
जय ऋषभदेव से वीर प्रभू तक, सबकी महिमा न्यारी है।
इन पंचकल्याणक सहित प्रभू को, नितप्रति धोक हमारी है।।1।।

चौबीसों जिन की जन्मभूमि का, अतिशय ग्रंथों में आया।
जहाँ पन्द्रह-पन्द्रह मास रतन-वृष्टि सुरेन्द्र ने करवाया।।
वह तीर्थ अयोध्या प्रथम तथा, कुण्डलपुर जन्मभूमि अन्तिम।
जहाँ तीर्थंकर माताओं ने, देखे सोलह सपने स्वर्णिम।।2।।

यूँ तो सब तीर्थंकर की शाश्वत, जन्मभूमि है अवधपुरी।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में, हो गईं पृथक् ये जन्मथली।।
इस कारण तीजे काल में ही, हुई कर्मभूमि प्रारंभ यहाँ।
तब नगरि अयोध्या धन्य हुई, हुआ प्रथम प्रभू का जन्म जहाँ।।3।।

उस शाश्वत तीर्थ अयोध्या में, इस युग के पाँच प्रभू जन्मे।
ऋषभेश अजित अभिनंदन एवं, सुमति अनंत उन्हें प्रणमें।।
गणधर मुनि एवं इन्द्र आदि से, वंद्य अयोध्या नगरी है।
वृषभेश्वर की ऊँची प्रतिमा, जहाँ तीर्थ की महिमा कहती।।4।।

जहाँ पाँच जिनेश्वर की टोंकों के, साथ बड़े दो मंदिर हैं।
जहाँ रायगंज के परिसर में, सम्पूर्ण व्यवस्था सुंदर है।।
आचार्य देशभूषण जी एवं, गणिनी माता ज्ञानमती।
इन उभय प्रेरणाओं से हुई, शुभ तीर्थ अयोध्या की प्रगती।।5

है बारम्बार नमन मेरा, उस तीर्थराज की धरती को।
युग-युग तक अमर रहे तीर्थंकर, की शाश्वत जन्मस्थलि वो।
तीर्थंकर के पितु-मात तथा, वह महल भी मंगलकारी है।
प्रभु के पदरज से पावन तीरथ, का कण-कण सुखकारी है।।6।।

इन जन्मभूमियों की श्रेणी में, श्रावस्ती संभव प्रभु की।
कौशाम्बी पद्मप्रभ की वाराणसि सुपार्श्व पारस प्रभु की।।
चन्द्रप्रभ जन्में चन्द्रपुरी में, पुष्पदन्त काकन्दी में।
भद्रिकापुरी में शीतल जिन, जन्मे श्रेयाँस सिंहपुरि में।।7।।

इनको वन्दन कर जन्मभूमि का, जीर्णोद्धार विकास करो।
तीनों लोक में पूज्य तीर्थ भूमी से स्वयं प्रकाश भरो।।
जिससे यह आत्मा भी इक दिन, तीरथ स्वरूप को प्राप्त करे
सांसारिक जन्ममरण आदिक, सब दुःखों का संताप हरे।।8।।

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य की, जन्मभूमि से पावन है।
पाँचों कल्याणक से केवल, चम्पापुर ही मनभावन है।।
कम्पिलापुरी में विमलनाथ, है धर्मनाथ की रत्नपुरी।
श्रीशांति कुंथु अरनाथ तीन की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।।9।।

मिथिलानगरी में मल्लिनाथ, नमिनाथ जिनेश्वर जन्मे हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर राजगृही, नेमी प्रभु शौरीपुर में हैं।।
कुण्डलपुर में महावीर प्रभू का, नंद्यावर्त महल सुन्दर।
प्राचीन छवी के ही प्रतीक में, ऊँचा बना सात मंजिल।।10।।

महावीर प्रभू का छब्बिस सौवाँ, जन्मकल्याणक जब आया।
तब ज्ञानमती माताजी ने, कुण्डलपुर विकसित करवाया।।
महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, का यश फैले जग भर में।
सब तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का प्रचार हो घर-घर में।।11।।

ये सोलह तीर्थ सभी तीर्थंकर, के जन्मों से पावन हैं।
ये गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान चार, कल्याणक से भी पावन हैं।।

इनके वन्दन से निज घर में, लक्ष्मी का वास हुआ करता।
इनके वन्दन से आतम में, सुख शांती लाभ हुआ करता।।12।।
भगवान न जब तक बन सकते, इन तीर्थों की यात्रा कर लो।
तीरथ यात्रा के माध्यम से, संसार महोदधि को तर लो।।
पूर्णार्घ्य महार्घ्य समर्पण कर, सब तीर्थ भाव से नमन करो।
पूजन का फल पाने हेतू, सब राग-द्वेष को शमन करो।।13।।

ज्यों राजहंस से मानसरोवर, की पहचान कही जाती।
त्यों ही जिनवर जन्मों से धरती, पावन पूज्य कही जाती।।
तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थों की, यह पूजन मंगलकारी।
करने व कराने वालों को, फल मिलता इससे सुखकारी।।14।।

सम्यग्दर्शन में दृढ़ता हो, प्रभु भक्ती ही बस लक्ष्य रहे।
रत्नत्रय की हो प्राप्ति प्रभू, गुणगान में रसना दक्ष रहे।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, ''चन्दनामती'' कर पाऊँ मैं।
सुगति में होवे गमन पुनः, क्रमशः शिवपद पा जाऊँ मैं।।15।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमिअयोध्याप्रभृति-कुण्डलपुरपर्यन्तसमस्तषोडशतीर्थक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छन्द–

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना

(मंगलचतुर्विंशतिका)

रचयित्री—गणिनी ज्ञानमती

(अनुष्टुप् छंद)

अयोध्या मंगलं कुर्या-दनन्ततीर्थकर्तृणाम्।
शाश्वती जन्मभूमिर्या, प्रसिद्धा साधुभिर्नुता।।1।।

ऋषभोऽजिततीर्थेशोऽप्यभिनंदनतीर्थकृत्।
श्रीमान् सुमतिनाथश्चा-नन्तनाथजिनेश्वरः।।2।।

पंचतीर्थकृतां गर्भ-जन्मकल्याणकादिषु।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या, वंद्यते वंदयिष्यते।।3।।

संप्रति कालदोषेण, शेषास्तीर्थंकराः पृथक्।
संजातास्ता अपिजन्म-भूमयो मंगलं भुवि।।4।।

श्रावस्ती मंगलं कुर्यात्, संभवनाथजन्मभूः।
तनुतान्मे मनःशुद्धिं, भव्यानां भवहारिणी।।5।।

कौशाम्बी मंगलं कुर्यात्, पद्मप्रभस्य जन्मभूः।
जिनसूर्यो मनोऽब्जं मे, प्रफुल्लीकुरुतादपि।।6।।

वाराणसी जगन्मान्या, मंगलं तनुतान्मम।
जन्मभूमिः सुरैः पूज्या, सुपार्श्वपार्श्वनाथयोः।।7।।

चन्द्रपुरी सुरैर्मान्या, मंगलं कुरुतात्सदा।
चन्द्रप्रभजिनेंद्रस्य, जन्मभूर्जन्मपावनी।।8।।

काकंदी मंगलं कुर्यात्, पुष्पदन्तस्य जन्मभूः।
आनंदं तनुताद् भूमौ, सर्वमंगलकारिणी।।9।।

मंगलं कुरुताच्नित्यं, जन्मभूर्भद्रकावती।
शीतलस्य जिनेंद्रस्य, मनो मे शीतलं क्रियात्।।10।।

सिंहपुरी जगन्मान्या, मंगलं कुरुतान्मम।
श्रीश्रेयांसजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिः शिवंकरा।।11।।

चंपापुरी जगद्वंद्या, मंगलं तनुताद् ध्रुवं।
वासुपूज्यजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिर्नुतामरैः।।12।।

सा कंपिलापुरी नित्यं, मंगलं कुरुतान्मम।
मच्चित्तं विमलीकुर्यात्, विमलेश्वरजन्मभूः।।13।।

रत्नपुरी यतीन्द्राणां, मंगलं कुरुताच्च नः।
सद्धर्मवृद्धये भूयाद्, धर्मनाथस्य जन्मभूः।।14।।

हस्तिनागपुरी नित्यं, मंगलं तनुतान्मम।
शांतिकुंथ्वरतीर्थेशां, जन्मभूमिर्जगन्नुता।।15।।

या मिथिलापुरी शश्वत्, मंगलं कुरुतान्मम।
जन्मभूमिः प्रसिद्धाभूत्, मल्लिनाथनमीशयोः।।16।।

मंगलं संततं कुर्यात्, राजगृही सुजन्मभूः।
मुनिसुव्रतनाथस्य, दद्यान्मे सुव्रतं त्वसौ।।17।।

शौरीपुर्यर्द्धचक्र्याद्यैः, मान्या मे मंगलं क्रियात्।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या, नेमिनाथस्य जन्मभूः।।18।।

या कुण्डलपुरी पूज्या, मंगलं कुरुताद् भुवि।
जन्मभूमिः प्रसिद्धास्ति, महावीरस्य संप्रति।।19।।

राजधानीह सिद्धार्थ-भूपतेः साधुभिर्नुता।
नंद्यावर्तं च प्रासादं, रत्नवृष्ट्या सुमंगलम्।।20।।

चतुर्विंशतितीर्थेशां, षोडश जन्मभूमयः।
वंद्यास्ता मंगलं कुर्युः, घ्नन्तु जन्मपरम्परां।।21।।

दीक्षाज्ञानस्थलं पूज्यं, प्रयागश्चाहिच्छत्रकं।
संततं मंगलं कुर्यात्, पूर्णज्ञानर्द्धये भवेत् ।।22।।

कैलाशचंपापावोर्ज-यन्तसम्मेदशृंगिषु।
निर्वाणभूमयो यास्ताः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।23।।

पंचकल्याणकैः पूज्या, भूमिसरोवराद्रयः।
तास्तान् ज्ञानमती याचे, दद्युः सिद्धिं च मे ध्रुवम्।।24।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना

– शेर छन्द–

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।

पहली जनमभूमि है नगरि तीर्थ अयोध्या।
शाश्वत जनमभूमी प्रभू की कीर्ति अयोध्या।।

इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत वे।।4।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
है भद्रपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिन की जन्मस्थली है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से जन्मभूमि वन्दना रची।
प्रभु जन्मभूमि तीर्थों की भक्ति मन बसी।।10।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि वन्दना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।

यह भक्तिसुमन थाल है गुणमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।
बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।12।।

PRAYER OF TIRTHANKARAS' BIRTHPLACES

Tune-Tumhi Ho Mata, Pita Tumhi Ho.....

Holy **Ayodhya** is first birthplace,
Where born Rishabh Ajit Abhinandannath.
Sumatinath Anantnath also born there,
So I bow to Pilgrimage Ayodhya. **(1)**

Second birthplace is **Shravasti**,
Where was born Sambhavnath Jinvar.
Crore of crores Jewels were rained there,
So I bow to Pilgrimage Shravasti. **(2)**

Kaushambi is third holy Pilgrimage,
Shri Padmaprabha Lord was born there.
Indra celebrated Festival then,
So I bow to Pilgrimage Kaushambi. **(3)**

Two Tirthankaras' birthplace is **Banaras,**
Who were Suparas and Lord Paras.
Both of mothers seen sixteen dreams there,
So I bow to Pilgrimage **Banaras. (4)**

Shri **Chandrapuri** is near Banaras,
Which is the birthplace of Chandraprabhu ji.
his place is waiting for us to progress,
I bow to that Pilgrimage Chandrapuri. **(5)**

Kakandi is sixth birthplace Tiratha,
There was born Pushpadanta Jinvar.
Saudharm Indra came from heaven,
So I bow to Kakandi Pilgrimage. **(6)**

The birthplace of Tirthankara tenth,
Bhaddilpuri is auspicious place.
Shitalnath was born at that place,
So I bow to Bhaddilpur Pilgrimage. **(7)**

Mother-land of Shreyansa Jinvar,
Shri **Singhapuri** is near Banaras.
That is today famous as Sarnath,
I bow to that Singhapuri Pilgrimage. **(8)**

Champapuri is nineth pilgrimage,
Which is the birthplace of Vasupujya Jin.
There became five Kalyanaks also,
So I bow to Champapuri tirth. **(9)**

Holy Pilgrimage is **Campilaji,**
The birthplace of Vimalnath ji.
His four Kalyanaks became too there,
So I bow to Campila Pilgrimage. **(10)**

Fifteenth Tirthankar Dharmanath,
Was born in **Ratnapuri** Pilgrimage.
Many heavenly deities came there ,
So I bow to Ratnapuri Tirath. **(11)**

Shri Shanti Kunthu Arah Tirthankars,
Were born in **Hastinapuri** Tirth.
Jambudvip is famous of there,
So I bow to Pilgrimage Hastinapur. **(12)**

Mithilapuri is holy Pilgrimage,
Where born Mallinath Naminath Jinvar.
Kuber rained then many Jewels there,
So I bow to Mithilapuri Tirath. **(13)**

Rajagrihi is historical place,
Where born Munisuvrat Jineshwar.

Five Mountains are famous of there,
So I bow to Rajgiri Pilgrimage. **(14)**

Twenty second Lord is Neminath,
Shauripur is his holy birthplace.
He got there four Kalyanak also,
So I bow to Shauripur Pilgrimage. **(15)**

Twenty fourth Tirthankar Mahavir,
He was born at **Kundulpuri** Tirth.
Situated there Nandyavarta Palace,
So I bow to Kundalpur Pilgrimage. **(16)**

These are sixteen holy Pilgrimages,
Birthplaces of twenty four Tirthankars.
Many developed by Ganini Gyanmatiji,
She says to you conserve also them. **(17)**

Twenty four Tirthankars' birthplaces
All are holy places of our country.
All of you travel to these Pilgrimages,
"Chandnamati" wants Ratnatraya Tirtha. **(18)**

भजन

तर्ज-चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।।

ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो.।।1।।

श्रावस्ती में संभव कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो.।।2।।

पुष्पदन्त काकन्दी शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो.।।3।।

कम्पिल जी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति कुंथु अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो
मल्लिनाथ नमिनाथ जन्मभूमि वंदन कर लो।। चलो.।।4।।

राजगृही में मुनिसुव्रत नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर जन्म सफल कर लो।। चलो.।।5।।

गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से ही "चन्दना" आत्मशुद्धि कर लो।। चलो.।।6।।

आरती

आरति करो रे,
चौबिस तीर्थंकर जन्मभूमि की आरति करो रे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे।
चौबिस तीर्थंकर जन्मभूमि की, आरति करो रे।।टेक.।।
शाश्वत जन्मभूमि जिनवर की, नगरि अयोध्या मानी है।
पर हुण्डावसर्पिणी युग की, बदली पुण्य कहानी है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सब तीर्थंकर की पुण्यभूमि की, आरति करो रे।।
चौबिस0।।1।।
ऋषभ, अजित, अभिनन्दन, सुमती, प्रभु अनन्त तीर्थंकर ने।
जन्म अयोध्या में लेकर, पावनता भर दी फिर उसमें।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
शुभ तीर्थ अयोध्या जन्मभूमि की, आरति करो रे।।
चौबिस0।।2।।
श्रावस्ती, कौशाम्बी, वाराणसी, चन्द्रपुरि, काकन्दी।
संभव, पद्म, सुपारस, पारस, चन्द्र व पुष्पदंत नगरी।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीर्थंकर जन्म व कर्मभूमि की आरति करो रे।।
चौबिस0।।3।।

तीर्थ भद्रिकापुरी, सिंहपुरि, चंपापुरि, कम्पिलनगरी।
शीतल, श्रेयो, वासुपुज्य एवं प्रभु विमल की जन्मपुरी।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चारों कल्याणक पावन भू की आरति करो रे।।
चौबिस0।।4।।
रत्नपुरी, हस्तिनापुरी, मिथिला, राजगृह, शौरीपुर।
धर्म, शांति, कुंथू, अर, मल्ली, नमि, मुनिसुव्रत, नेमीश्वर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
आठों जिनवर की जन्मभूमि की आरति करो रे।।
चौबिस0।।5।।
कुण्डलपुर महावीर प्रभू की जन्मभूमि अतिपावन है।
चौबिस जिन की जन्मभूमियाँ सोलह अति मन भावन है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
''चन्दनामती'' सब पुण्यभूमि की, आरति करो रे।।
चौबिस0।।6।।
जन्मभूमि का यह विधान, सबके जीवन को सफल करे।
सबकी पुनः पुनः यात्रा, आतमतीर्थ को प्रगट करे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीरथ एवं तीर्थंकर प्रभु की आरति करो रे।।
चौबिस0।।7।।

भजन

रचयित्री – आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-पंखिड़ा.....

वंदना.....वंदना.....
वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की।
बीसवीं सदी की पहली बालसती की।।वंदना.....

इनके मात-पिता का, गुणानुवाद मैं करूँ।
इनकी जन्मभूमि का भी, साधुवाद मैं करूँ।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वन्दना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना...।।1।।

इनके ज्ञान की प्रशंसा, सारी दुनिया करती है।
इनके नाम की प्रशंसा, पुस्तकों में मिलती है।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।2।।

वीर के युग की ये, लेखिका पहली हैं।
ढाई सौ ग्रंथों की, लेखिका साध्वी हैं।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।3।।

इनके वात्सल्य में, माँ की ममता भरी।
इनके सानिध्य में, मुझको समता मिली।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।4।।

इनके तप त्याग में, लाभ लेते सभी।
''चन्दना'' भाग्य से, भक्ति करते सभी।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।5।।